सरदार वल्लभ भाई पटेल की राजनेता के रूप में भूमिका

ईश्वर चन्द्र सागर,
इतिहास विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
Email: dr.icsagar78@gmail.com

सारांश

सरदार पटेल क्रान्तिकारी नहीं थे। सरार वल्ल्भ भाई पटेल भारतीय स्वतन्त्रता के दौरान सबसे प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्होंने अंग्रेजों को देश से भगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1928 से 1931 के बीच भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उददेश्यों पर हो रही महत्वपूर्ण बहस में पटेल का विचार था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लक्ष्य स्वाधीनता नहीं बल्कि ब्रिटिश राष्ट्रकुल के भीतर अधिराज्य का दर्जा प्राप्त करने का होना चाहिए। बलपूर्वक आर्थिक और सामाजिक बदलाव लाने की आवश्यकता के बारे में सरदार पटेल ने जवाहर लाल नेहरू से असहमत थे। पारम्परिक हिन्दू मूल्यों से उपजे रूढ़िवादी पटेल ने भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना में समाजवादी विचारों को अपनाने की उपयोगिता का उपहास किया। वह मुक्त उद्यम में यकीन रखते थे। इस प्रकार उन्हें रूढ़िवादी तत्वों का विश्वास प्राप्त हुआ तथा उनसे प्राप्त धन से ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियां संचालित होती रहीं।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 24.08.2019
Approved: 24.09.2019

ईश्वर चन्द्र सागर,

सरदार वल्लभ भाई पटेल की राजनेता के रूप में भूमिका

RJPP 2019,
Vol. XVII, No. 2,
pp.60-66
Article No. 9

***Online available at** : http:// rjpp.anubooks.com/*

प्रस्तावना

डाहया भाई देसाई में सरदार पटेल के विषय में सही कहा है कि..... दूसरे प्रान्तों में गांधी जी को मिल जाने वाले नेताओं और सरदार वल्लभ भाई पटेल में एक बड़ा फर्क था। उन्होंने अंग्रेजी और बैरिस्टर की शिक्षा पाई थी, परन्तु उनका स्वभाव किसान का था। गुजरात के देहाती जीवन का उन्हें बचपन से अनुभव था। वे शहर में नहीं अपने गांव में पले बढ़े थे।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने सरदार पर अपने एक लेख में उन्हें दष्ढ़ महान देश भक्त और देश प्रेमी बताते हुए कहा है कि ''वह कांग्रेस में अकेला व्यक्ति था जिसने बड़ी संख्या में सत्याग्रही संघर्षों को नेतृत्व प्रदान किया और सफलता का श्रेय प्राप्त किया।

देश को स्वतन्त्रता मिली तो वरिासत में प्राप्त असंख्य समस्याओं का निदान सरदार पटेल ने किया। न केवल देश को एक संघ में पिरोने की घटना बल्कि प्रशासन को सही अर्थों में प्रशासन बनाने, नौकरशाही को जनता की ओर मोड़ने, संविधान को पूर्णतः प्रजातान्त्रिक बनाने, विभाजन के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने तथा देश के भविष्य को सुनिश्चित करने की घटनायें सरदार पटेल को इतिहास में विशेष स्थान प्रदान करती है। इससे भी अधिक देश के समाज व राजनीति को स्वस्थ, साफ नैतिकतापूर्ण, सुदष्ढ़ सर्वहितकारी, सजग और आदर्शमयी आदि बनाने में भी सरदार पटेल ने अथक परिश्रम किया, जो उन्हें एक राजनेता, एक आन्दोलनकारी, एक संगठनकर्ता, एक निर्माता तथा व्यवहारवादी व्यक्तित्व से भी अधिक एक चिन्तक ठहराता है। सार्वजनिक जीवन की शुरूआत पटेल ने गुजरात सभा के सचिव के रूप में की। सभा के विलय के पश्चात कांग्रेस में विलय किया। 1920 में वे गुजरात प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष बने मार्च 1931 में वे कांग्रेस के अखिल भारतीय अध्यक्ष (कराची अधिवेशन) निर्वाचित हुए। 15 दिसम्बर, 1950 तक (अपनी मष्त्यु के समय तक) उसके संगठन पर पूर्णतयः छाये रहे। 1947 में स्वतन्त्रता काल अथवा उपरान्त कांग्रेस की नैय्या विभिन्न बार डगमगाई, जिसे सरदार पटेल ने सुरक्षित रूप से पार लगाया। इसका गौरव सरदार पटेल को ही जाता है कि उन्होंने कांग्रेस को केन्द्रीय सत्ता के गौरवपूर्ण स्थान पर उन्होंने प्रतिष्ठित किया। उसमें एक ऐसी गति उत्पन्न की, जिसका लाभ उठाकर पण्डित नेहरू और कांग्रेस ने उसे तब तक बनाये रखा, जब तक वह 1967 के आम चुनावों में आंशिक असफलता का शिकार नहीं हो गयी। कोई सत्ताधारी संस्था अपनी प्रारम्भिक गति के बल पर इतने दीर्घकाल तक टिकी रहे, इसके बहुत ही कम उदाहरण मिलते हैं, परन्तु कांग्रेस टिकी रही है, यह सत्य है कि इसका श्रेय सर्वाधिक सरदार को है, जिन्होंने अपने नेतृत्व के गुणों से कांग्रेस को विश्व का महान संगठन बनाया और कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में डूबती नाव को पार किया तथा दलीय कार्यों से स्वंय को बेजोड़ नेता भी सिद्ध किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में भागीदारी

14 मई, 1928 को बारदोली सत्याग्रह के दौरान तालुका के किसानों को सम्बोधित करते हुए सरदार पटेल ने कहा कि थोड़े से लोगों की लापरवाही से बेडा गर्क हो सकता है लेकिन जहाज को सही सलामत बंदरगाह तक लाने के लिए उस पर सवार सभी लों के पूरे सहयोग की जरूरत होती है। कार्यकर्ताओं की बात को ध्यानपूर्वक सुनते थे, भले ही निर्णय कुछ भी लेते हों।

इससे कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊँचा उठता था और वे सुदष्ढ़ संगठन में बंध जाते थे। कार्यकर्ताओं के साथ अनन्द से बातें कर वे छोटी–छोटी सभी खबरें जान लेते थे। सरदार का सदा यह मत रहा है कि संगठन के अन्दर जो कुछ भी कहना हो कहे, विचारों का पूर्ण आदान–प्रदान कर ले, दिल खोलकर जो कहना हो, कह ले, परन्तु संगठन को नहीं छोड़े। उनके स्वयं दल के समाजवादी सदस्यों, नेहरू जी, मौलाना आजाद, सुभाष चन्द बोस तथा गांधी जी तक से मतभेद हुए परन्तु न तो उन्होंने दल छोड़ा न छोड़ने की बात कही, अपितु साथियों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर देशभर के हित को सर्वोच्च मानकर संगठन कि साथियों के साथ चलते रहे। यहां तक कि अनेक बार नेहरू जी की भी संगठन से उदासीनता को समाप्त कर दिया।

यद्यपि संगठन के नेता के नाते सरदार कांग्रेस के सदस्यों में जिस श्रद्धा और विश्वास का संचार करते थे, उसके द्वारा वे स्थानीय निर्णयों को प्रभावित करते थे, लेकिन वे अपने मत का आग्रह उसी सीमा तक रखते थे जहां तक कि वह लोकतंत्र के सिद्धान्त के विरूद्ध न हो। सरदार के राजनीतिक दृष्टिकोण स्पष्ट और दूरगामी था इसलिए उनकी कार्यपद्धति का ही भाव उनकी संगठनात्मक योग्यता का एक मजबूत आधार था, जिसने संगठनात्मक साथियों व कार्यकर्ताओं के मन में सरदार के प्रति विश्वास उत्पन्न किया।

संगठनात्मक कार्यों के प्रति सरदार का दर्षष्टिकोण सदा ही सेवा कर रहा है और उन्होंने कभी किसी यश प्राप्ति की इच्छा से काम करने का विचार नहीं किया। उनका कहना था कि सेवा भाव से जब हम किसी कार्य को चुन लेते हैं तो उससे फिर विचलित क्यों हों? सेवापूर्ण कार्य जब कोई कार्यकर्ता पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ करेगा। तो वह अवश्य आगे ही बढ़ेगा। संगठन के प्रति सरदार का मत था कि ऐसे काम को कभी भी स्वीकार न किया जाये जिससे संगठन की छवि धूमिल होती हो। संगठन के नेता के लिए वे उदारता से भी कार्य करने का संदेश देते हैं और कहते है कि यदि दोषी मनुष्य अपना दोष स्वीकार कर ले और दोबार दोष न करने के निश्चय के साथ कांग्रेस की सेवा करना चाहे, तो ऐसे मनुष्य का न अपमान हो और न ठुकराया जाए।'' क्रूरता बरतना दल में भविष्य में विस्फोटक हो सकता है।

दूसरे संगठन को छोड़कर आये व्यक्तियों को अपने संगठन में सम्मिलित करना नहीं चाहते थे, उनका मत था कि दूसरों को कमजोर बनाकर हम लोकतंत्र पर प्रहार करेंगें। जब अधिकता से दल बदल हो तो वास्तविकता से अपना संगठन ही कमजोर और अटिकाऊ बनता है, संगठन की कीमत घटती है। साथ ही वे संगठन को तभी सरकार बनाने की सलाह देते है जब उसे टिकाऊ, सुदष्ढ़ और स्वच्छ सरकार गठित कर पाने की आशा हो। वे नाम मात्र की सरकार को नहीं चाहते हैं। 1937 के चुनाव के बाद उन्होंने स्पष्अ रूप से मत प्रकट किया था कि जिस प्रान्त में कांग्रेस को विश्वास हो कि यदि वह मन्त्री पद स्वीकार करेगी। तो किसी भी प्रकार दुविधा हुए बिना वह सबका सहयोग प्राप्त करके प्रान्त की सेवा कर सकेगी और कांग्रेस की इज्जत बढ़ा सकेगी, उस प्रान्त को कांग्रेसी मन्त्रीमण्डल रचने की इजाजत दी जाये और जिस प्रान्त की कांग्रेस यह मानती हो कि अपना शासन चलाने की शक्ति अभी भी उसमें नहीं है, उसे मन्त्रीमण्डल रचने के आदेश से मुक्त किया जाएं। संगठन के नेता के रूप में उनकी सफलता का

राज उनके द्वारा संजोये अनुशासन में मिलता है। उनका विश्वास था कि अनुशासन राष्ट्रीय संघर्ष में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। जिस संगठन में अनुशासन सम्बन्धी शिथिलता आ जाती है और जिसमें सेवा एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का अभाव उत्पन्न हो जाता है वह संगठन देश के लिए प्रभावशाली नहीं बन सकता फिर राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष वह कैसे जीत पायेगा। इसी आशय का पत्र लिखते हुए कहा था– अगर संगठन को नहीं सुधारेंगे तो जिस जगह से कांग्रेस को (आज की) प्राण प्राप्त हुआ है, वहीं से उनका क्षय शुरू होगा। और इसका सारा दोष आपकी कांग्रेस के संचालकों पर आज पड़ेगा।

राजनीतिक सकियतावाद

सरदार का योगदान दलीय संगठन में निर्णायक था और इसमें जरा भी संदेह नहीं था इनके महान गुणों और आदर्शों के कारण नीचे से ऊपर तक के सभी सदस्यों में उनकी साख थी और सदस्यों का विश्वास उन्हें प्राप्त था। सामान्यतः सभी कांग्रेसी उनका आदर करते थे, और उनसे डरते थे, वे अपनी सरलता, निष्कपटता और निर्णय के लिए विख्यात थे। स्थानीय राजनीति की उनकी पकड़ भी त्वरित व ज्ञानवर्द्धक थी और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर देशव्यापी और सुदष्ढ़ संगठन खड़ा करके उन्होंने देश की महान सेवा की। किसी भी प्रजातान्त्रिक देश में उनके व्यक्तित्व का संगठनकर्ता, समकाल में शायद ही कोई हो। यद्यपि लेनिन और माओत्से तुंग उससे अलग आदर्शों के पालक थे, लेकिन उनके अलग आदर्शों और अपने प्रजातांत्रिक आदर्शों से भी सरदार पटेल उनसे कम श्रेष्ठ दलीय संगठनकर्ता नहीं रहे। सरदार का मत था कि संगठन के बिना संस्था बल बेकार है। सूत के बारीक तार जब अलग–अलग होते हैं तो इतने कमजोज होते हैं कि हवा के झोंके से भी टूट जाते हैं और ताने बाने में बुने जाकर कपड़े का रूप लेते हैं, तब इनकी मजबूती, सुन्दरता और उपयोगिता अद्भूत बन जाती है। ऐसे संगठनात्मक योग्य व्यक्तित्व वाले थे, सरदार वल्लभ भाई पटेल।

पटेल की कार्यक्षमता, पूर्व के सत्याग्रहों और नेतष्त्व की विलक्षणता को देखकर 25 माच्र, 1931 को कांग्रेस महासमिति के 46 वें अधिवेशन कारांची में अध्यक्षता सौंपी गई। यह समय आयन्त ही गम्भीर और दुःख भरे वातावरण का था क्योंकि इस समय सम्पूर्ण देश में दो घटनायें, गांधी–इरविन पैक्ट तथा भगत सिंह व उनके साथियों को फांसी, चर्चा का विषय थीं। यह सरदार के लिए परीक्षा की घड़ी और स्वंय को सिद्ध करने का वक्त था। खेड़ा सत्याग्रह से लेकर बारदोली सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा भंग तक के विख्यात संघर्षों में महान त्याग व कार्य कर अपने परिपक्व विचारों तथा विशाल ह्रदय वाले सरदार पटेल ने स्वयं को बेजोड़ राष्ट्रीय नेात ही सिद्ध नहीं किया अपितु समस्त समस्याओं का निदान करके कांग्रेस संगठन के लिए आदर्श भी स्थापित किये।

नवयुवक भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को फांसी के उपरान्त देश में गुस्सा व्याप्त था जिस पर सरदार ने भगत सिंह व उनके साथियों की देश साथियों की देश भक्ति, साहस तथा बलिदान की प्रशंसा की। उनकी हिंसात्मक कार्य पद्धति का न केवल असमर्थन किया, अपितु अप्रत्यक्ष यप से निन्दा करके अंहिसात्मक गांधीवादी मार्ग की भी पुष्टि की। ब्रिटिश तन्त्र की

आलोचना कर उसे अनैतिकता व क्रूरता का प्रतीक बताया, क्योंकि सम्पूर्ण देश की मांग थी, उसने स्वीकार नहींकिया। गांधी–इरविन समझौते पर सरदार की मनोव्यथा थी कि जब इस सन्धि का समर्थन करने के लिए मैं खड़ा होता हूं तो इस प्रस्ताव में कुछ रहस्य होना चाहिए। लाल आंखों व दर्द भरी वाणी से उनके कथन का विशेष प्रभाव सदस्यों पर पड़ा, किन्तु उन्होंने आगे कहा– गांधी जी को 63 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, मुझे 56। स्वराज्य की जल्दी हम बूढ़ों को होगी या आप नौजवानों को। हमें मरने से पहले हिन्दुस्तान को आजाद देखना है, इसलिए आप से जल्दी हम को है। इस प्रकार सरदार ने स्वराज प्राप्ति की पूर्ण मांग के लिए संघर्ष को जारी रखने और युवकों से धैर्य रखने की अपील की। स्वदेशी और गरीबी पर सरदार का मत था कि हिन्दुस्तान के भूखे मरने वाले गरीबों के लिए जैसे विदेशी वस्तुओं बहिष्कार भी जनता के नैतिक हित के ख्याल से उतना ही जरूरी है जब तक सस्ता विदेशी कपड़ा भारत के गांव–गांव में बिकता है, तब तक चरखा नहीं गूंजेगा और भारत वर्ष के देहात में बसने वाले और भुखमरी सहने वाले लाखों करोड़ों कंगाल लोग सीधे खड़े हो सकेंगे। 9,10 व 11 जून 1931 को सरदार की अध्यक्षता में कार्य समिति की बैठक बम्बई में हुई तथा उसमें तय किया गया कि यदि आवश्यकता हो तो स्थिति के अनुसार गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधितव गांधी जी द्वारा किया जाना चाहिए।

श्री नरीमन को भारतीय कैदियों की सूची गांधी जी को सौंपने का निर्णय हो अथवा स्वदेशी बोर्ड के गठन का मामला हो, जो खादी के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं के प्रमाण की व्यवस्था हेतु सिफारिश कर सके या कांग्रेस के प्रस्तावों का हिन्दी में भाषानुवाद करने की व्यवस्था का निर्णय हों, सभी में सरदार की अहम भूमिका थी। 08 अगस्त, 1931 को सरदार बल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक बम्बई में हुई और उसमें घोषणा की गई कांग्रेस घोषित करती है कि कोई भी संविधान तभी आधार पर स्वीकार कर लिया जायेगा। अथवा स्वराज्य की प्रतीक सरकार तभी उसकी सक्षमता में स्वीकार की जायेगी जबकि उनमें 14 मौलिक अधिकार शामिल किये जायेंगे। सरदार पटेल के जीवन की श्रेष्ठता और योग्यता का निर्धारण इससे भी हुआ कि उन्होंने किसानों को अन्ततः न्याय दिलाने की भरसक कोशिष की।

सरदार पटेल लन्दन से गोलमेज सम्मेलन तथा अन्य राजनैतिक गतिविधियों की सूचना को कांग्रेस कार्यसमिति में रखते थे। इस पर उन्होंने एक सुन्दर कड़ी के रूप में कार्य किया।

कुशल संगठनकर्ता

''कार्य निःसन्देह पूजा और हंसना ही जीवन है'', इस सूत्र के जनक सरदार पटेल का संगठनात्मक जीवन उनकी कार्यक्षमता का अद्‌भूत उदाहरण था जो उनके द्वारा किये गये दल के कार्यों में झलकता था। सरदार पटेल ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को सर्वोच्च संस्था बनाने में जीवनान्त तक कोई कसर न उठा रखी। उनके कार्यों की इस काल में लम्बी सूची रही थी। कांग्रेस को अमन बनाने के तीन कार्य–

1. सन् 1937 के प्रान्तीय विधान सभाओं के प्रमुख के रूप में चुना।
2. नेताजी सुभाषचन्द बोस के कांग्रेस छोड़ने के उपरान्त हुई हानि को भरने के रूप में।

3. 1946 के चुनावों के प्रमुख के रूप में।

गर्वमेन्ट ऑफ इण्डिया एक्ट 1935 के अन्तर्गत जब प्रान्तीय एसेम्बलियों के चुनाव में कांग्रेस ने भाग लेने का निर्णय किया तो सरदार पटेल ने प्रमुख की श्रेष्ठ भूमिका का निर्वाह किया। इस दौरान सरदार ने पूरे देश का भ्रमण किया। सरदार ने प्रत्येक प्रान्त में प्रेम व सहयोग के साथ प्रत्येक मामले को निपटाने में संसदीय समिति के अध्यक्ष के रूप में अद्‌भुत कौशल दिखाया। कांग्रेस की यह पार्लियामेन्टरी कमेटी उम्मीदवारों का भी चयन करती थी, इसलिए इन्होंने अत्यन्त ही सावधानी से उम्मीदवारों का चयन किया। सावधानी की क्षमता उनमें इतनी अधिक थी कि वे सम्पूर्ण संगठन और कार्यकर्ताओं का हिलाकर रख देते थे। श्री के0 एम0 मुन्शी उन दिनों उनके साथ रह रहे थे, वे कहते थे कि जब 1937 का चुनाव आया तो उन्होंने उन्हें चुनावों की व्यवस्था, उम्मीदवारों को तय करते मन्त्रियों को तय करते और उनको नियन्त्रित करते हुए देखा। यह सरदार के कठिन परिश्रम का ही परिणाम था कि 11 प्रान्तों में से 06 प्रान्तों बम्बई, मद्रास, बिहार, मध्य प्रान्त सयुंक्त प्रान्त और उड़ीसा में निश्चित बहुमत मिला। 19 व 20 मार्च, 1937 को जीते हुए कांग्रेसी सदस्यों का एक सम्मेलन रखा गया जिसमें सरदार ने सेनापति के रूप में, चुनावों की व्यवस्था, निर्देश, उम्मीदवारों का चयन, चुनावों में विजय, मन्त्रिमण्डल का गठन व संचालन करके अद्वितीय कार्य भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल के लिए किया।

1939 में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कांग्रेस (त्रपुरा) के पुनः अध्यक्ष चुने गये थे, लेकिन गांधी के कार्यक्रमों से उनका सैद्धान्तिक मतभेद था। जिसके चलते गांधी ने अध्यक्ष पद हेतु पट्‌टामि सीतारमैय्या को मत देने का आह्‌वान किया। नतीतजन सुभाष पुनः अध्यक्ष चुन लिये गये। दिन–ब–दिन टकराव बढ़ने से 1939 के मध्य में नेताजी ने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर एक नया दल फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना कर ली। स्वाभाविक रूप से कांग्रेस को हानि उठानी पड़ी और सबसे बड़ी बात प्रथम बार कांग्रेस से सीधा चुनाव हुआ, इसलिए गांधी जी के नेतृत्व में दलीय एकता भंग हुई। सरदार ने एक वर्ष के भीतर ही, तुरन्त कार्य प्रारम्भ करके हानि की भरपाई की और पूर्व से अधिक अनुशासन प्रिय संगठन को बना दिया। नई जान के साथ कांग्रेस उठ खड़ी हई।

25 दिसम्बर 1946 को केन्द्रीय चुनाव बोर्ड की मीटिंग में दो प्रस्ताव पास किये गये–

1. प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने किसी निर्वाचन क्षेत्र के लिए अपनी रिपोर्ट में यदि एक ही उम्मीदवार का नाम सूचित किया हो और यदि कांग्रेसजनों में उसके बारे में कोई विवाद न हो, तो सरदार पटेल को कमेटी का प्रस्ताव स्वीकार करने की सत्ता दी जाती है।
2. दूसरे मामलों में उम्मीदवारों के नाम सरदार की सिफारिश से बोर्ड के अन्य सदस्यों के पास उनकी राय के लिए भेजे जायें।

इस समय सरदार पूना में दुःसाध्य पेट दर्द से पीड़ित थे। प्राकृतिक चिकित्सालय में जहां महात्मा गांधी भी अपनी चिकित्सा करा रहे थे, सरदार की चिकित्सा की जा रही थी, परन्तु कोई लाभ नहीं दिख रहा था। कांग्रेस के लिए चुनाव सम्बन्धी जिम्मेदारी बहुत बड़ी थी और इस सम्बन्ध में कोई खतरा उस समय लेना कितना हानिकारक होता? सरदार 1937 के चुनावों के मुख्य

संगठक थे। उस समय वे कांग्रेस की पार्लियामेन्टरी सब कमेटी के अध्यक्ष थे यह कमेटी चुनावों के लिए उम्मीदवारों को पसन्द करती थी। 1945–46 के चुनावों के लिए चुनाव आन्दोलन संगठित करने की जिम्मेदारी भी सरदार पर डाली गई। वे ही चुनावों के लिए फण्ड एकत्र करने वाले प्रमुख शायद एकमात्र व्यक्ति थे। उन्होंने यह जिम्मेदारी इतने उत्तम ढंग से पूरी की कि किसी ने पैसे की तंगी की शिकायत नहीं की।

इस प्रकार 1945–46 के चुनावों में जिस प्रकार कांग्रेस को सफलता मिली सरदार पटेल ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। सरदार पटेल राजनीतिज्ञ के रूप में, उद्यम, निश्चय राजनीतिक स्थिरता और व्यक्ति को पहचानने का निर्णय लेना, सहायकों तथा अधीनस्थों में विश्वास उत्पन्न करना और इससे अधिक प्रभावकारी प्रकृति के दर्शन–सरदार की मुख्य विशेषतायें थीं वे एक महान व सक्षम राजनीतिज्ञ थे। समय की पुकार का नाम सरदार पटेल था।

चाणक्य चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री जो मौर्य साम्राज्य का वास्तविक निर्माता तथा स्थापनाकर्ता था, उस समय के इतिहास का, वह शायद एक ऐसा अकेला व्यक्तित्व था, जिसने सरदार पटेल के समान उपलब्धियां हासिल की।

निष्कर्ष

भारतीय राष्ट्रीय किांग्रेस को वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप में एक नई दिशा देने के कारण सरदार पटेल ने राजनीतिक इतिहास में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया। वास्तव में वे आधुनिक भारत के शिल्पी थे। उनके कठोर व्यक्तित्व में विस्मार्क जैसी संगठन कुशलता कौटिल्य जैसी राजनीक सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा थी। जिस अदम्य उत्साह असीम शक्ति से उन्होंने नवजात गणराज्य की प्रारम्भिक कठिनाईयों का समाधान किया। उसके कारण विश्व के राजनीतिक मानचित्र में उन्होंने अमिट स्थान बना लिया। भारत के राजनीतिक इतिहास में सरदार पटेल के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

संदर्भ ग्रन्थ

1. पी0डी0 सग्गी, ए0 नेशनल होमेज, ओवरसीज पब्लिशिंग हाउस, सोहराब हाउस, 235, हार्नबाइ रोड फोर्ट, बॉम्बे–1, पृष्ठ **641**
2. कैसे वल्लभभाई पटेल वी पी मेनन और मांउटबेटन ने भारत को एकजुट किया भारतीय एक्सप्रेस, सोमवार, 16 सितम्बर 2019
3. एकती की ब्रहममूर्ति सरदार वल्लभभाई पटेल, गुगल पुस्तक।
4. सामुदायिक शक्ति गुजरात में किस तरह से पटेलो का बोलबाला है, हिन्दुस्तान टाइम्स, 2 नवम्बर 2017
5. सरदार वल्लभभाई पटेल व्यक्तित्व एवं विचार हिन्दी पीएचपी भारतीय साहित्य संग्रह अभिगमन तिथि, 7 दिसम्बर 2012।
6. सरदार वल्लभ भाई पटेल, हिन्दी वेबदुनिया हिन्दी, अभिगमन तिथि 7 दिसम्बर 2012।
7. लौह पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल, हिन्दी जागरण जंक्शन, अभिगमन तिथि 7 दिसम्बर।